

दो सिर वाला पक्षी

एक तालाब में भारण्ड नाम का एक विचित्र पक्षी रहता था। इसके दो मुख थे, किन्तु पेट एक ही था। एक दिन समुद्र के किनारे घूमते हुए उसे एक अमृतसमान मधुर फल मिला। यह फल समुद्र की लहरो ने किनारे पर फैक दिया था। उसे खाते हुए एक मुख बोला- "ओ , कितना मीठा है यह फल ! आज तक मैंने अनेक फल खाये, लेकिन इतना स्वादिष्ट कोई नहीं था। न जाने किस अमृत बेल का यह फल है।"

दूसरा मुख उससे वंचित रह गया था। उसने भी जब उसकी महिमा सुनी तो पहले मुख से कहा- "मुझे भी थोडा सा चखने को देदे।"

पहला मुख हँसकर बोला, "तुझे क्या करना है? हमारा पेट तो एक ही है, उसमे वह चला ही गया है। तृप्ति तो हो ही गई है।"

यह कहने के बाद उसने शेष फल अपनी प्रिया को दे दिया। उसे खाकर उसकी प्रेयसी बहुत प्रसन्न हुई।

दूसरा मुख उसी दिन से विरक्त हो गया और इस तिरस्कार का बदला लेने के उपाय सोचने लगा।

अन्त मे, एक दिन उसे एक उपाय सूझ गया। वह कही से एक विषफल ले आया। प्रथम मुख को दिखाते हुए उसने कहा- "देख ! यह विषफल मुझे मिला है। मैं इसे खाने लगा हूँ।"

प्रथम मुख ने रोकते हुए आग्रह किया- "मूर्ख ! ऐसा मत कर, इसके खाने से हम दोनो मर जायेंगे।"

द्वितीय मुख ने प्रथम मुख के निषेध करते-करते, अपने अपमान का बदला लेने के

लिये विषफल खा लिया। परिणाम यह हुआ कि दो मुखों वाला पक्षी मर गया।

सच ही कहा गया है कि संसार में कुछ काम ऐसे हैं, जो एकाकी नहीं करने चाहिये। अकेले स्वादु भोजन नहीं खाना चाहिये, सोने वालों के बीच अकेले जागना ठीक नहीं, मार्ग पर अकेले चलना संकटापन्न है; जटिल विषयों पर अकेले सोचना नहीं चाहिये।

सीख : मिलकर काम करो।

ब्राह्मण-कर्कटक कथा

ए भिर बाला पत्नी

एक दुलाग भेरागुनाम का एक विपिउ पत्नी ररुता था। उमक ए भूप घ, किनुपुए एक की था। एक दिन मभूक किनार भेभउरुए उम एक मभउमभान भएरु डल भिला। वरु डल मभूकी लरु ने किनार पर डके दिया था। उम पोउरुए एक भूप गले- "उ, किउना भीरु रुथेरु डल ! मुए उक भने मनेके डल पाय, लेकिन उउना मदीपुकरे नकी था। न एन किम मभउ गले का वरु डल को"

एभरा भूप उमम वेपिउ ररु गया था। उमन ही एम उमकी भकिभा मदी उपेरुल भूप मकेरु-
-"भए ही घरे भा पापन के देदी"

परुला भूप रुभेकर गले, "उरु के करन रुकेरुभारा परे उरुए की रु, उममवेरु एला की गया कोउपिउ के की गरु को"

वरु करन के गेए उमन मेघे डल मपनी पिया क दे दिया। उम पोकर उमकी प्येभी गरुउ पुनरुकरु।

एभरा भूप उभी दिन म विररुगेथा एर उम उिरभू का गदला लने के उपाय मणेन लेगा।

मनुभ, एक दिन उम एक उपाय मएरु गया। वरु ककी म एक विधल ल मुथा। पुषम भूप को मियाउरुए उमन केरु- "एपे ! वरु विधल भए भिला कोभे उम पोपन लेगा को"

पुषम भूप न रेकेउरुए मुगु किथ- "भत्त ! रिभा भउ कर, उमक पोपन मे रुम एने भेर एथगा"

मिदीय भूप न पुषम भूप को निधरे करउ-करउ, मपन मपमान का गदला लने के लिय विधल पा लिया। परिणम वरु रुमु कि ए भूप बाला पत्नी भर गया।

मए की कला गया रुके मभार भकेरु का म रिम के एरु का की नकी करन एरुकिथामकले मभू रुएन नकी पापन एरुकिथ, मने बाल के मीए मकले एगन ठीक नकी, भाज पर मकले एलन मकेएपनरु, एएल विधय पर मकले मणेन नकी एरुकिथ।

भीप : भिलकर काम करे

मनराए - विष्टु कील
एला